बाल संरक्षण और सहयोगी पदाधिकारियों के लिए
सामाजिक और व्यवहार परिवर्तन मॉड्यूल

कार्यकर्ताओं के क्षमतावर्धन हेतु
राज्य स्तर पर उपयोग के लिए प्रशिक्षण मॉड्यूल

new concept
Centre for Development Communication

unicef
for every child

विषय–सूची

सत्र 1: सत्र परिणाम 1

सत्र 2: बाल संरक्षण के संदर्भ में एसबीसी और बहु–हितधारक जुड़ाव को समझना 3

सत्र 3: एसबीसी के लिए रणनीतिक संचार 13

सत्र 4: एसबीसी के लिए अभिसरण कार्य योजना 23

मॉड्यूल राज्य स्तरीय प्रशिक्षण मॉड्यूल

अवलोकन

यह मॉड्यूल सामजिक ओर व्यवहार परिवर्तन (एसबीसी) की अवधारणा और संचार कौशल का परिचय है जो बाल संरक्षण (सीपी) पर किए जाने वाले प्रशिक्षणों को प्रभावी और उपयोगी बनाने में सहायता करेगा। इसके अलावा, इस मॉड्यूल में बच्चों से बात करने के लिए आवश्यक संचार कौशल जैसे सक्रियता से सुनना, समानुभूति आदि के बारे में बात की गई है। मॉड्यूल में एसबीसी कार्यक्रमों के प्रभावी कार्यान्वयन तथा बाल संरक्षण कार्यक्रमों में अभिसरण और समन्वय को मजबूत करने पर सत्र भी शामिल हैं।

सत्र योजनाः राज्य स्तरीय प्रशिक्षण मॉड्यूल– 3 घंटे

क्रम सं.	सत्र	विषय वस्तु /उद्देश्य	पद्धति	समय
1	परिचय	• आइस ब्रेकर • प्रशिक्षण के उद्देश्य • बुनियादी नियम		10 मिनट
2	सीपी के संदर्भ में एसबीसी और बहु–हितधारकों के जुड़ाव को समझना –	• एसईएम लेंस के अनुसार बाल संरक्षण एक बहु–क्षेत्रीय मुद्दे के रूप में • बाल संरक्षण के लिए बहु–हितधारकों की भागीदारी की आवश्यकता • बाल संरक्षण के मुद्दों को प्रभावित करने वाले सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक कारकों की पहचान करना • बाल अधिकारों का परिचय	• गतिविधि • सामूहिक कार्य • उदाहरण • पीपीटी	60 मिनट
3	एसबीसी के लिए रणनीतिक संचार	• एसबीसी और बाल संरक्षण के लिए संचार का महत्व • एसबीसी के लिए व्यवहार संबंधी अंतर्दृष्टि (Behavioural insights)। • एसबीसी और संचार रणनीति • एसबीसी के लिए प्रभावी संचार के लिए आवश्यक कौशल	• समूह कार्य • उदाहरण • पीपीटी	60 मिनट
4	अभिसरण कार्य योजना	• संबंधित पदाधिकारियों, उनकी भूमिकाओं और जिम्मेदारियों की पहचान करना • अभिसारी प्रोग्रामिंग • अभिसरण कार्य योजना	• समूह कार्य • उदाहरण • पीपीटी	50 मिनट

सत्र 1

सत्र परिणाम

सत्र के अपेक्षित परिणाम

सत्र के अंत तक प्रतिभागी:

- एक–दूसरे से परिचय के बाद कार्यशाला के उद्देश्यों को सूचीबद्ध कर सकेंगे
- प्रशिक्षण से उनकी अपेक्षाओं को सूचीबद्ध कर पायेंगे
- बुनियादी नियमों पर सहमति बना पाएंगे

आवश्यक सामग्री

- प्रोजेक्टर, प्रशिक्षण पूर्व मूल्यांकन प्रपत्र, फ्लिप चार्ट
- सहभागी योजना (वीआईपीपी) कार्ड।

समय

10 मिनट

प्रक्रिया

- सभी प्रतिभागियों का स्वागत करें और प्रशिक्षण की संक्षिप्त पृष्ठभूमि बताएं।
- आइस–ब्रेकर के बाद सभी प्रतिभागियों से अपना परिचय देने के लिए कहें।

  प्रतिभागियों से निम्नलिखित बातें साझा करने के लिए कहें:
  - नाम
  - स्थान/जिला
  - सीपी कार्यकर्ता के रूप में अनुभव का समय
  - प्रतिभागियों से किसी ऐसी एक चीज के बारे में बताने के लिए कहें जो उन्हें बचपन में उन्हें बहुत पसंद थी। यह एक खाने की चीज या कोई खिलौना या कोई अन्य कोई भी वस्तु हो सकती है। साथ ही उनसे एक बाल अधिकार के बारे में भी बताने के लिए कहें जिसके प्रति उनका विशेष लगाव रहा हो।
  - प्रतिभागियों को यह जानकारी साझा करने के लिए एक मिनट का समय दें।
- पूर्व–प्रशिक्षण मूल्यांकन फॉर्म वितरित करें (यदि हो तो)
- प्रतिभागियों को बताएं कि यह फार्म उनके मूल्यांकन के लिए नहीं बल्कि कार्यशाला में सम्मिलित किए जाने वाले विषयों के संबंध में उनके विचार और जानकारी का स्तर जानने के लिए है। यह जानकारी प्रशिक्षण को प्रभावी बनाने में सुविधाकर्ता के लिए सहायक होगी।
- इसके बाद, प्रतिभागियों को विप कार्ड वितरित करें और उनसे कार्यशाला से अपनी अपेक्षाओं को लिखने के लिए कहें। विप कार्ड एकत्र करके उन्हें दीवार/पिन–अप बोर्ड पर लगे चार्ट पेपर पर चिपका दें।
- सभी प्रतिभागियों के परामर्श से सत्र आयोजित करने के लिए बुनियादी नियम निर्धारित करें। उन्हें उन बुनियादी नियमों को बताने के लिए प्रोत्साहित करें जिनका वे पालन करेंगे न कि उनके बारे में बताया जाए। उन्हें एक चार्ट पर लिखें और चार्ट को प्रशिक्षण कक्ष में लगा दें।
- स्लाइड/फ्लिपचार्ट दिखाकर प्रतिभागियों के साथ प्रशिक्षण के उद्देश्य साझा करें। (उद्देश्यों पर स्लाइड दिखाएं या फ्लिप चार्ट पर लिखें)

  प्रशिक्षण के अंत तक प्रतिभागी:
  - बाल संरक्षण – इसकी प्राथमिकताओं, संरचना, कार्यक्रम, नीतियों और इसके तंत्र से परिचित होंगे
  - सीपी प्राथमिकताओं और कार्यक्रम परिणामों को प्राप्त करने में सामाजिक और व्यवहार परिवर्तन की भूमिका और महत्व को जानेंगे।
  - सीपी प्राथमिकताओं के लिए एसबीसी कार्यक्रमों को शुरू करने के लिए कार्य योजना विकसित कर पाएंगे।

सत्र 2

बाल संरक्षण के संदर्भ में एसबीसी और बहु–हितधारक जुड़ाव को समझना

सत्र के अपेक्षित परिणाम

सत्र के अंत तक प्रतिभागी:

- SEM के माध्यम से बाल संरक्षण को एक बहुक्षेत्रीय मुद्दे के रूप में जान पाएंगे
- बाल संरक्षण के लिए बहु–हितधारकों की सहभागिता की आवश्यकता को जानेंगे
- बाल संरक्षण के मुद्दों को प्रभावित करने वाले सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक कारकों का वर्णन कर पाएंगे
- बाल अधिकारों को परिभाषित कर पाएंगे

समय

- 60 मिनट
- एसईएम गतिविधि, बहु–हितधारक जुड़ाव और सामाजिक, आर्थिक सांस्कृतिक कारक – 40 मिनट
- बाल अधिकार – 20 मिनट

आवश्यक सामग्री

- प्रोजेक्टर, फ्लिप चार्ट, बाल विवाह से संबंधित विभिन्न हितधारकों के नाम वाली पर्चियां
- सुझाए गए हितधारकों को यहां साझा किया गया है, हालांकि आवश्यकता के आधार पर और भी जोड़े जा सकते हैं

किशोरी, किशोरी के पिता, किशोरी की माँ, किशोरी के दादा, किशोरी की दादी, किशोरी के बड़े भाई–बहन, किशोरी के समकक्ष लोग, किशोरी के परिवार के पड़ोसी (पति, सास, यदि किशोरी विवाहित है), परिवार के रिश्तेदार

स्कूल अध्यापक, बाल विवाह निषेध अधिकारी, पंचायती राज संस्था (पीआरआई) सदस्य, स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) सदस्य, मान्यता प्राप्त सामाजिक स्वास्थ्य कार्यकर्ता (आशा), सहायक नर्स दाई (एएनएम), आंगनबाडी कार्यकर्ता (एडब्ल्यूडब्ल्यू), चिकित्सक, वीएलसीपीसी के सदस्य

डीसीपीयू स्टाफ, जिला स्तरीय अधिकारी जैसे सीडब्ल्यूसी, जेजेबी, विशेष किशोर पुलिस यूनिट (एसजेपीयू) के अधिकारी, विधानमंडल सदस्य विधानसभा (विधायक), संसद के सदस्य (एमपी), मीडिया, ब्रांड एंबेसेडर, केंद्र में अधिकारी

प्रक्रिया

गतिविधिः प्रतिभागियों से एक–एक पर्ची उठाने के लिए कहें। प्रतिभागियों को निर्देश दें कि वे अपनी पर्चियों की विषयवस्तु पर दूसरों के साथ चर्चा न करें। सभी प्रतिभागियों को एक घेरे में खड़ा करें। उनसे पूछे कि अगर हमें एक किशोरी लड़की का उदाहरण लेना हो जो हाई स्कूल के बाद भी अपनी शिक्षा जारी रखना चाहती है, तो उसकी आयु लगभग क्या होगी? संभावित उत्तर 16–17 वर्ष और उससे अधिक होंगे। फिर बताएं कि हम सभी जानते हैं कि जो लोग 10–19 वर्ष की आयु के बीच आते हैं उन्हें किशोर कहा जाता है। जिन प्रतिभागियों की पर्ची पर किशोरी लिखा हो उनसे बीच में आ कर खड़े होने के लिए कहें।

- अब प्रतिभागियों से पूछें कि उनके परिवार में कौन से लोग उन्हें सबसे अधिक प्रभावित करते हैं? (सुझाए गए उत्तरः पिता, माता, दादा–दादी, भाई–बहन आदि) जिन प्रतिभागियों की पर्चियों पर ये नाम लिखे हों उनसे आगे आकर किशोरी पर्ची वाले प्रतिभागी के चारों ओर एक घेरा बनाने के लिए कहें।
- इसके बाद, दूसरे घेरे में खड़े लोगों से पूछें, कि ऐसे कौन से लोग हैं जो आपकी बेटी की शिक्षा के संबंध में आपको प्रभावित करते हैं? (सुझाए गए उत्तरः पड़ोसी, रिश्तेदार, ग्राम स्तर के पदाधिकारी, पीआरआई आदि) अन्य प्रतिभागियों को बुलाकर उन्हें दूसरे घेरे के चारों ओर तीसरा घेरा बनाने के लिए कहें। प्रतिभागियों से कहें कि सबसे भीतरी घेरे में एक किशोरी लड़की है। दूसरे समूह में उसके निकटतम परिवार के सदस्य और वे लोग शामिल हैं जिनसे वह रोज बातचीत करती है। तीसरे घेरे में रिश्तेदार, पड़ोसी, दोस्त, सहकर्मी या समुदाय के सदस्य सम्मिलित हैं जो एक ही क्षेत्र में रहते हैं।
- शेष हितधारकों के लिए भी इसी तरह जारी रखें और पूछें कि क्रमशः तीसरे और चौथे घेरे में लोगों को कौन प्रभावित करता है। इस प्रकार बने चौथे और पांचवें घेरे को संगठन और नीति निर्माता कहा जाएगा।
- प्रतिभागियों को बताएं कि इस गतिविधि से पता चलता है कि बच्चों और किशोरों की भलाई और विकास के लिए सभी स्तरों पर सहयोगी वातावरण की आवश्यकता है। इससे न केवल व्यक्ति को स्वस्थ व्यवहार अपनाने में मदद मिलती है बल्कि उसका अभ्यास भी बना रहता है। कई स्तरों पर अपने वातावरण के साथ बच्चे का यह जुड़ाव सामाजिक पारिस्थितिक मॉडल (एसईएम) पर आधारित है।

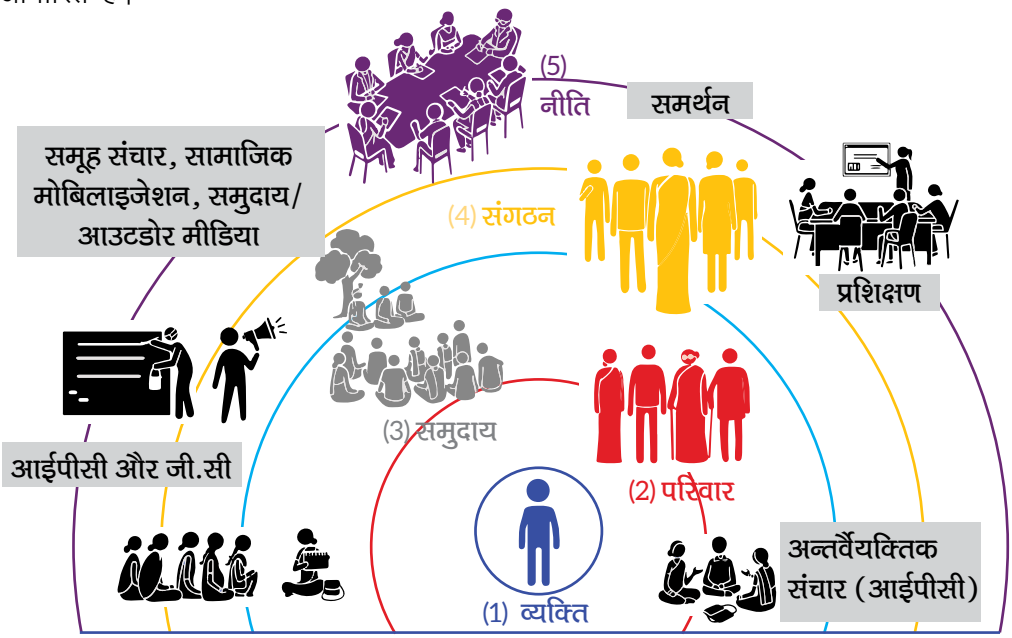

- प्रतिभागियों को यह भी समझाएं कि हर स्तर पर ऐसे समर्थक और बाधाएं होती हैं जो बच्चों और किशोरों को प्रभावित करती हैं। प्रतिभागियों के समूह से कहें कि वे शिक्षा में बाधाओं के उदाहरणों और परिवार, स्कूल और समुदाय स्तर पर स्कूल छोड़ने के कारणों के बारे में सोचें।

उदाहरण:

- **पारिवारिक स्तर पर:** गरीबी, बच्चों की आय में योगदान की जरूरत, बच्चों की जल्दी शादी। स्कूल स्तर पर भेदभाव, शिक्षकों की अनुपस्थिति, धमकाना।
- **सामुदायिक स्तर पर:** बच्चों की शिक्षा को समर्थन की कमी, जल्दी शादी करने के मानदंड।
- **नीति और संगठन स्तर पर:** शिक्षा को बढ़ावा देने वाले कानूनों और योजनाओं के कार्यान्वयन में देरी, बाल विवाह और बाल श्रम पर रोक।
- प्रतिभागियों से कहें कि विपरीत परिस्थितियों के बारे में सोचें। जैसे परिवार और समुदाय बच्चों की शिक्षा का समर्थन करें, बाल श्रम के खिलाफ खड़े हों, बाल विवाह न करें, और बच्चों के लिए बेहतर योजनाओं और कार्यक्रमों की मांग करें।
- माता–पिता लिंग–भेद न करें और लड़कियों और लड़कों को समान अवसर दें, जैसे पोषण, शिक्षा, खेल, और भागीदारी।
- स्कूल समावेशी, आनंददायक, और आकर्षक बनें। शिक्षक सभी बच्चों को स्कूल में बनाए रखने के लिए माता–पिता और समुदायों के साथ काम करें।
- बाल विवाह और बाल श्रम कानूनों का सही से पालन हो और नियमों का उल्लंघन करने वालों को दंडित किया जाए।
- प्रतिभागियों को एसईएम के प्रत्येक स्तर पर उपरोक्त बाधाओं और समर्थकों के बारे में समझाएं कि:
  - हमें कई लोगों के साथ मिलकर काम करने की जरूरत होती है। बच्चों और किशोरों के लिए सुरक्षित और सहायक माहौल बनाने के लिए, बाल संरक्षण अधिकारियों और जिम्मेदारियों को इन लोगों के साथ मिलकर काम करना चाहिए। इसे हम 'बहु–हितधारक सहभागिता' कहते हैं। यह भी जरूरी है कि ये सभी लोग एक साथ मिलकर काम करें। इस उद्देश्य के लिए, हमें बाल अधिकारों के उल्लंघन को रोकने और उसका जवाब देने के लिए एक कार्य योजना बनानी चाहिए, ताकि हम प्रभावित बच्चों और परिवारों का समर्थन और पुनर्वास कर सकें।
  - उदाहरण के लिए, महिला एवं बाल विकास, शिक्षा, श्रम और स्वास्थ्य विभाग को कानून प्रवर्तन एजेंसियों के साथ मिलकर बाल श्रम और बाल विवाह को रोकने के लिए समुदायों के साथ काम करना चाहिए। हर विभाग की इसमें महत्वपूर्ण भूमिका है। बाल श्रम को रोकने के लिए ये सभी विभाग मिलकर काम कर सकते हैं और बच्चों को सुरक्षित और अच्छा भविष्य दे सकते हैं।

1. शिक्षा विभागः खास तौर पर, हमें स्कूल छोड़ने वाले गरीब और कमजोर परिवारों के बच्चों की पहचान करने में स्कूल के अधिकारियों और शिक्षकों की मदद चाहिए। उन्हें इन छात्रों की रिपोर्ट करनी होगी, ताकि सरकारी अधिकारियों और अग्रिम पंक्ति के अधिकारियों को इन ड्रॉप–आउट के बारे में जानकारी मिल सके।
2. महिला एवं बाल विकास विभागः आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं, चाइल्डलाइन और अग्रिम पंक्ति के पदाधिकारी बाल श्रम में लगे बच्चों के परिवारों का दौरा करेंगे। वे पुलिस और श्रम विभाग के साथ समन्वय में बच्चों को खतरनाक श्रम से बाहर निकालने के लिए बचाव अभियान भी चलाएंगे।
3. कानून प्रवर्तन एजेंसियां बचाव अभियान में मदद करेंगी और सुनिश्चित करेंगी कि दोषियों और उल्लंघनकर्ताओं को सजा मिले।
4. श्रम विभाग न केवल बचाव का समर्थन करेगा, बल्कि यह भी देखेगा कि सुरक्षित बचाए गए बच्चों को उचित मुआवजा दिया जाए और उनका पुनर्वास हो।
5. स्वास्थ्य विभाग, स्वास्थ्य पदाधिकारी यह सुनिश्चित करेंगे कि बचाए गए बच्चों का इलाज हो और उन्हें ठीक किया जाए, जो चोट लगने या व्यावसायिक खतरों के कारण हो सकता है।

- अलग–अलग विभागों और हितधारकों को साथ मिलकर काम करने के लिए, उन्हें एक–दूसरे की मदद करनी चाहिए। इसे सुनिश्चित करने के लिए, अभिसरण योजना बहुत महत्वपूर्ण है – जहां सभी मिलकर यह सुनिश्चित करते हैं कि उनके क्षेत्र में हर बच्चे की सुरक्षा है और वे अपनी जिम्मेदारियों को अच्छी तरह से समझते हैं।
- उन्हें एसईएम पर स्लाइड दिखाएं और बाल संरक्षण मुद्दे पर विभिन्न हितधारकों का प्रभाव बताएं। निम्न आंकड़ा बाल श्रम पर विभिन्न हितधारकों के प्रभाव को दर्शाता है।
- बाल विवाह के मुद्दे के समाधान के लिए इन हितधारकों के साथ जुड़ने के महत्व पर चर्चा करें और इसका महत्त्व भी बताएं।
- बच्चों की भलाई को प्रभावित करने वाले विभिन्न कारकों को प्रतिभागियों के साथ साझा करें। SEM लेंस के माध्यम से बाल संरक्षण एक महत्वपूर्ण मुद्दा है, क्योंकि यह सीधे अन्य क्षेत्रों पर भी प्रभाव डालता है। उदाहरण के रूप में, बाल विवाह को रोकने से बच्चों को स्कूल में रहने का अवसर मिलता है, जिससे उनकी

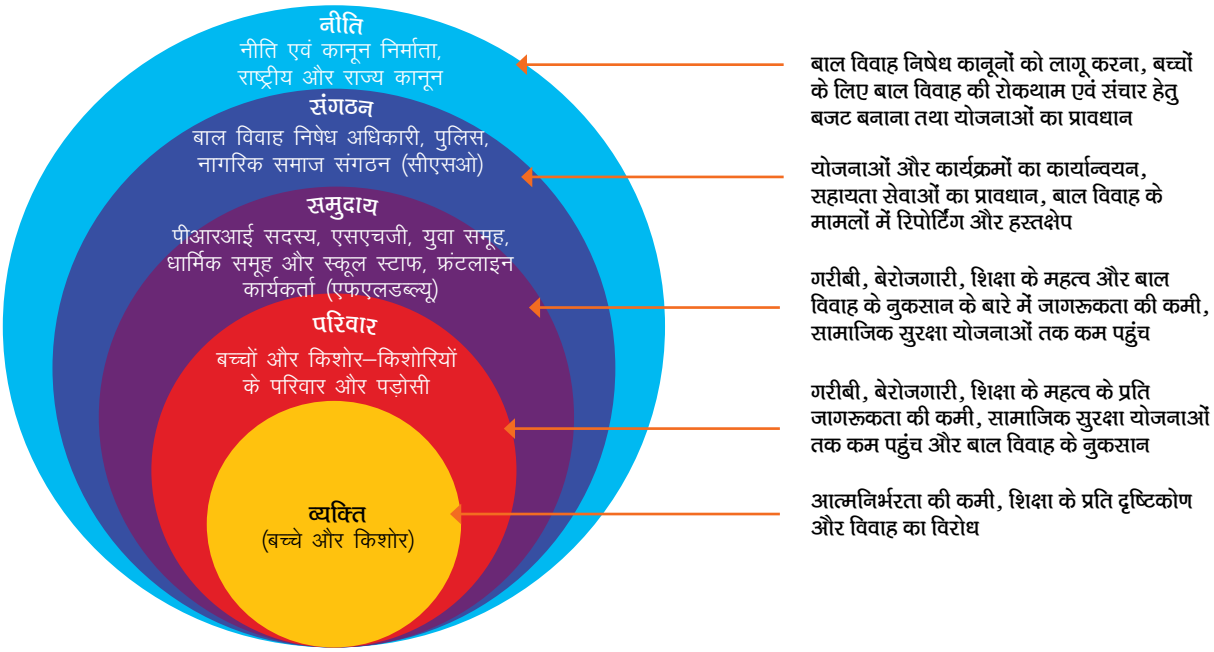

शिक्षा पूरी हो पाती है। इसी तरह, समय पर विवाह कराने से बच्चे स्वस्थ और सुरक्षित रह सकते हैं और उन्हें जल्दी माता–पिता बनने के जोखिम से बचाया जा सकता है।

गतिविधिः समूह में बाल संरक्षण को प्रभावित करने वाले सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक कारकों की सूची तैयार करने के लिए कहें। प्रतिभागियों को 2 मिनट का समय दें ताकि वे इन कारकों के बारे में सोच सकें, और फिर उन्हें फ्लिपचार्ट पर सूचीबद्ध करें।

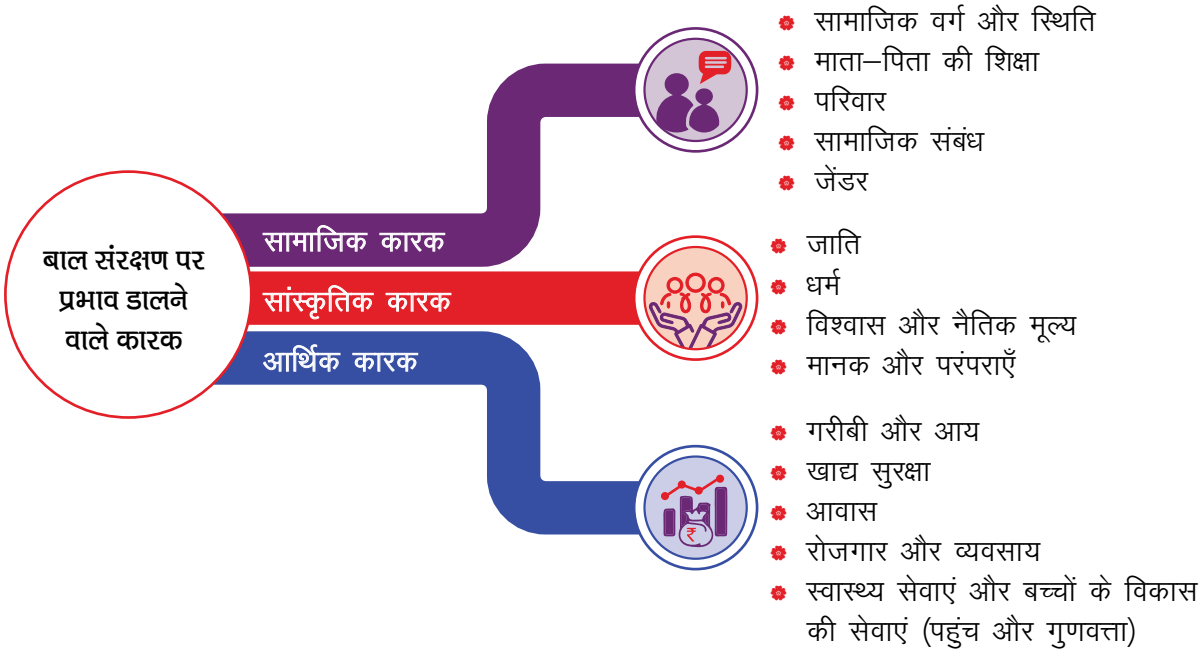

- उदाहरणों पर चर्चा करें कि सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक कारक बाल संरक्षण को कैसे प्रभावित करते हैं।
  - सामाजिक कारक – हमारे समाज में, अलग–अलग जातियों और वर्गों के बच्चे भेदभाव का सामना करते हैं, और लड़कियों को जेंडर के आधार पर भी अन्याय का सामना करना पड़ता है।
  - सांस्कृतिक कारक – हमारी समाजिक और धार्मिक मान्यताओं के कारण, समूहों के बीच मतभेद, भेदभाव और हिंसा उत्पन्न होती है, जिससे बच्चे अधिक प्रभावित होते हैं। लड़कियों की जल्दी शादी कर देना जैसे मान्यताओं के परिणामस्वरूप बाल विवाह होता है।
  - आर्थिक कारक – गरीब परिवारों के बच्चे स्कूल नहीं जा पाते या पर्याप्त पोषण नहीं प्राप्त कर पाते, जो उनके अधिकारों का उल्लंघन है।

अब उन्हें आपस में चर्चा करने के लिए 5 मिनट का समय दें कि कैसे सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक कारक बाल विवाह को प्रभावित करते हैं और बाल संरक्षण, स्वास्थ्य, शिक्षा और कानून प्रवर्तन जैसे विभिन्न क्षेत्रों के बीच सहयोग से इन कारकों को कैसे संभाला जा सकता है।

इस प्रकार निष्कर्ष निकालें:

सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक कारक बच्चों के विकास पर असर डालते हैं, यानी उन्हें मजबूत बनाते हैं या कमजोर करते हैं। इसलिए, सरकारों और कर्तव्यपालकों को अपने काम में इन कारकों का ध्यान देना चाहिए, ताकि बच्चों की सुरक्षा हो। उदाहरण के रूप में, विवाह में देरी के लिए सरकार द्वारा दी जाने वाली आर्थिक प्रोत्साहन सामाजिक और मानक दोनों कारकों को संबोधित करता है। कोई भी क्षेत्र अकेले बाल विवाह को समाप्त नहीं कर सकता, क्योंकि यह एक जटिल चुनौती है। इसलिए, समुदायों, राज्यों और देश को बाल विवाह मुक्त बनाने के लिए बाल संरक्षण, स्वास्थ्य, शिक्षा, स्थानीय शासन और कानून प्रवर्तन में साथ आना होगा।

बाल संरक्षण को प्रभावित करने वाले हितधारकों और कारकों को जानने वाले समूह से पूछें कि उनके संचालन और राज्य के क्षेत्रों में प्रचलित विभिन्न बाल अधिकार मुद्दे और चुनौतियाँ क्या हैं। उनके उत्तरों को फ्लिप चार्ट पर नोट करें।

- अब प्रतिभागियों को निम्नलिखित स्लाइड दिखाएं। प्रतिभागियों को दो समूहों (ए और बी) में बाँटें। एक समूह को 'उत्तरजीविता और विकास' और दूसरे समूह को 'सुरक्षा और भागीदारी' का मुद्दा सौंपें।

बच्चों को प्रभावित करने वाले मुद्दे

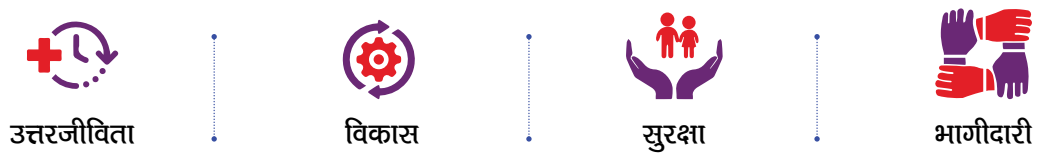

- समूह ए से बाल संरक्षण के मुद्दों को 'उत्तरजीविता' और 'विकास' की अलग–अलग श्रेणियों में क्रमबद्ध करने के लिए कहें। समूह बी से बाल संरक्षण के मुद्दों को 'सुरक्षा' और 'भागीदारी' की अलग–अलग श्रेणियों में क्रमबद्ध करने के लिए कहें। उन्हें अभ्यास करने के लिए 5 मिनट और निष्कर्ष प्रस्तुत करने के लिए 5 मिनट का समय दें।
- समूह के साथ चर्चा करें कि जब हम बच्चों के संरक्षण और भागीदारी के मुद्दों को देखते हैं, तो हम उन्हें दो अलग–अलग श्रेणियों में बाँट सकते हैं। एक श्रेणी में हम उनकी 'सुरक्षा' करने की बात कर सकते हैं, जबकि दूसरी श्रेणी में हम 'भागीदारी' के मुद्दों पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं। लेकिन कभी–कभी ऐसा हो सकता है कि कुछ विशेष मुद्दों को किसी एक श्रेणी में सूचीबद्ध करना मुश्किल हो, क्योंकि एक मुद्दा बच्चों को कई तरीकों से प्रभावित कर सकता है। उदाहरण के लिए, आवास और संरक्षण का मुद्दा उनके विकास के साथ भी जुड़ा हो सकता है। क्योंकि बच्चे जो बेघर होते हैं, वे अक्सर शोषण और दुर्व्यवहार का शिकार होते हैं, जो उनके विकास को प्रभावित कर सकता है।
- निष्कर्ष साफ है कि बच्चों के अस्तित्व या उत्तरजीविता, विकास और सुरक्षा तथा भागीदारी को सुनिश्चित करने के लिए उनके पास कुछ अधिकार हैं जिन्हें बाल अधिकार कहा जाता है।
- अब उन्हें अगली स्लाइड दिखाएँ।

बाल अधिकार क्या हैं?

- 'अधिकार' एक मांग है, जो दूसरों पर सम्मान करने, सुरक्षा करने या पूरा करने का दायित्व डालता है।
- हमारे लिए जो अधिकार हैं, वे अन्य लोगों के लिए भी होते हैं और सभी का एक समान दायित्व होता है। अधिकार का सम्मान करना अपने कर्तव्य को पूरा करना है। बच्चों के मामले में, माता–पिता, देखभालकर्ता और कर्तव्य–वाहकों की जिम्मेदारी है कि वे उनकी आवश्यकताओं (देखभाल, परिपालन, सुरक्षा, संरक्षण, अन्य शारीरिक, भावनात्मक और मानसिक आवश्यकताओं) का ध्यान रखें।
- यूएनसीआरसी ने ''बाल अधिकारों को न्यूनतम अधिकार और स्वतंत्रता के रूप में परिभाषित किया है जो 18 वर्ष से कम उम्र के प्रत्येक नागरिक को जाति, राष्ट्रीय मूल, रंग, लिंग, भाषा, धर्म, राय, मूल, धन, जन्म स्थिति या क्षमता की परवाह किए बिना प्रदान किया जाना चाहिए।'' इसलिए यह नियम हर जगह सभी लोगों पर लागू होता है। इन अधिकारों में बच्चों की स्वतंत्रता और उनके नागरिक के रूप में अधिकार, पारिवारिक वातावरण, आवश्यक स्वास्थ्य देखभाल, शिक्षा, अवकाश और सांस्कृतिक गतिविधियाँ और विशेष सुरक्षा उपाय शामिल हैं। सभी बच्चों के पास ये अधिकार हैं और ये सभी अधिकार समान रूप से महत्वपूर्ण हैं, साथ ही एक–दूसरे से जुड़े हुए हैं।

बाल अधिकारों पर स्लाइड दिखाएं।

यूएनसीआरसी बच्चों के अधिकारों को चार व्यापक श्रेणियों में वर्गीकृत करता है जो प्रत्येक बच्चे के सभी नागरिक, राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक अधिकारों को उपयुक्त रूप से कवर करते हैं:

- **जीवित रहने/जीवन जीने का अधिकार:** बच्चे के जीवन के अधिकार और उन जरूरतों को शामिल करता है जो अस्तित्व के लिए सबसे बुनियादी हैं, जैसे पोषण, आश्रय, पर्याप्त जीवन स्तर और चिकित्सा सेवाओं तक पहुंच।

- **विकास का अधिकार:** प्रत्येक बच्चे को विकास का अधिकार है जो बच्चे को उसकी पूरी क्षमता का पता लगाने और विकसित करने का अवसर देता है। इसमें शिक्षा, खेल, अवकाश, सांस्कृतिक गतिविधियाँ, सूचना तक पहुंच और विचार, विवेक और धर्म की स्वतंत्रता का अधिकार शामिल है।

- **सुरक्षा का अधिकार:** बच्चों को शारीरिक या मानसिक रूप से चोट और दुर्व्यवहार से बचाने का अधिकार है। यह सुनिश्चित करता है कि बच्चों को सभी प्रकार के दुर्व्यवहार, हिंसा, उपेक्षा और शोषण से बचाया जाए, जिसमें शरणार्थी बच्चों की विशेष देखभाल, आपराधिक न्याय प्रणाली में बच्चों के लिए सुरक्षा उपाय, रोजगार में बच्चों के लिए सुरक्षा, किसी भी प्रकार के शोषण या दुर्व्यवहार से पीड़ित बच्चों के लिए सुरक्षा और पुनर्वास।

- **भागीदारी का अधिकार:** बच्चों को अपनी राय व्यक्त करने, अपने जीवन को प्रभावित करने वाले मामलों में अपनी बात रखने, संघों में शामिल होने और उनकी उम्र और परिपक्वता के अनुसार शांतिपूर्वक इकट्ठा होने की स्वतंत्रता शामिल है। इसका मतलब यह है कि बच्चों को एक जिम्मेदार वयस्क (Adult) होने की तैयारी के लिए अपने समाज की गतिविधियों में भाग लेने का अधिकार है।

ये अधिकार आपस में जुड़े हुए हैं और इन्हें किसी भी परिस्थिति में छीना नहीं जा सकता।

- **समूह कार्यः** दोनों समूहों से बच्चों को अलग अधिकारों की आवश्यकता, पर चर्चा करने के लिए कहें। उन्हें चर्चा के लिए और अपने निष्कर्ष साझा करने के लिए 5–5 मिनट का समय दें।
  - प्रतिभागियों को "बच्चों को अलग अधिकारों की आवश्यकता क्यों" विषय पर स्लाइड दिखाएँ।
  - बच्चों को असुरक्षित होने का अहसास होता है, और उन्हें आर्थिक, राजनीतिक और शारीरिक रूप से समाज का सबसे कम शक्तिशाली वर्ग माना जाता है।
  - लड़कों की तुलना में लड़कियां अक्सर अधिक असुरक्षित होती हैं, जब उन्हें समान भोजन, शिक्षा और अन्य सामाजिक अधिकार नहीं मिलते या उनकी शादी जल्दी कर दी जाती है।
  - बच्चों को अपनी आवाज उठाने का मौका नहीं मिलता है, क्योंकि वे वोट नहीं दे सकते हैं और इसलिए उन्हें अपनी आवाज उठाने में मुश्किल होती है।
  - बच्चों के साथ अक्सर दुर्व्यवहार किया जाता है, जिसमें पिटाई, तस्करी, अपहरण और यौन शोषण शामिल होता है।
  - बच्चों को विशेष सुरक्षा की आवश्यकता है, क्योंकि वे बाल श्रम, कम उम्र में विवाह, और संघर्ष वाली स्थितियों में रहने के लिए संवेदनशील होते हैं।
  - बच्चों की अक्सर भावनाओं और विचारों को गंभीरता से नहीं लिया जाता है, जो कि उन्हें अधिकारों के उल्लंघन के प्रति अधिक संवेदनशील बना सकता है।

इस प्रकार निष्कर्ष निकालेंः

चूँकि बच्चे असुरक्षित हैं और उनके पास अपनी चिंताओं को व्यक्त करने के लिए कोई संस्था नहीं है, इसलिए उन्हें बाल अधिकार दिए जाते हैं।

मुख्य सीख

बाल संरक्षण एक बहुक्षेत्रीय मुद्दा है जिसमें परिवार, समुदाय, संगठन और नीति निर्माताओं की भागीदारी और सहयोग की आवश्यकता होती है। इन्हें SEM के विभिन्न स्तरों के रूप में देखा जा सकता है जो बच्चे को प्रभावित करते हैं।

बाल संरक्षण सुनिश्चित करने के लिए बहुहितधारकों की भागीदारी की आवश्यकता होती है। इसलिए, बाल संरक्षण कार्यकर्ताओं को न केवल बच्चों और उनके परिवारों के साथ बल्कि अन्य सरकारी अधिकारियों (स्वास्थ्य, शिक्षा, श्रम आदि), नागरिक समाज संगठनों और नीति निर्माताओं के साथ भी काम और सहयोग करना चाहिए।

सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक कारक बच्चों और उनके अस्तित्व, विकास, सुरक्षा और भागीदारी को प्रभावित करते हैं। इस प्रकार, उनके पास बाल अधिकार हैं।

बाल अधिकार वह हक हैं जो हर उस नागरिक को मिलने चाहिए जो 18 वर्ष से कम उम्र का है। इसमें वे जाति, राष्ट्रीय मूल, रंग, लिंग, भाषा, धर्म, राय, मूल, धन, जन्म स्थिति या क्षमता के आधार पर भेदभाव के बिना स्वतंत्रता प्राप्त करते हैं। इन अधिकारों में बच्चों की स्वतंत्रता, उनके नागरिक अधिकार, परिवारिक माहौल, आवश्यक स्वास्थ्य देखभाल, शिक्षा, अवकाश और सांस्कृतिक गतिविधियों का समावेश है। ये अधिकार सभी बच्चों के पास होने चाहिए और इनका महत्व बराबरी का होना चाहिए, और इनमें जुड़ाव भी होना चाहिए।

बच्चों के अधिकारों को चार श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है: अस्तित्व, विकास, सुरक्षा, और भागीदारी। बच्चे असुरक्षित होते हैं और उन्हें अपनी चिंताओं को व्यक्त करने के लिए कोई संस्था नहीं होती, और इसलिए उन्हें बाल अधिकार दिए जाते हैं।

सत्र 3

एसबीसी के लिए रणनीतिक संचार

सत्र के अपेक्षित परिणाम

सत्र के अंत तक प्रतिभागी:

- एसबीसी और बाल संरक्षण के लिए संचार के महत्व को जानेंगे
- एसबीसी के महत्व के लिए व्यवहार संबंधी अंतर्दृष्टि (Behavioural insights) पर विस्तार से जानेंगे
- एसबीसी और संचार रणनीति के तत्वों की सूची बना पाएंगे
- प्रभावी एसबीसी के लिए कौशल को बता सकेंगे

समय

- 60 मिनट
- एसबीसी और बाल संरक्षण के लिए संचार और बीआई का महत्व – 10 मिनट
- एसबीसी रणनीति – 40 मिनट
- एसबीसी के लिए कौशल – 10 मिनट

आवश्यक सामग्री

- प्रोजेक्टर, पीपीटी, फ्लिप चार्ट

प्रक्रिया

- पिछले सत्र से एसईएम मॉडल को दोबारा दोहराएं और प्रत्येक स्तर पर सामाजिक और व्यवहार परिवर्तन लाने के लिए विभिन्न हितधारकों के साथ जुड़ने की आवश्यकता के बारे में बात करें। वांछित सामाजिक और व्यवहार परिवर्तन लाने के लिए प्रत्येक स्तर पर हितधारकों के साथ उचित तरीकों और टूल्स के माध्यम से जुड़ना महत्वपूर्ण है।
- स्लाइड दिखाएँ और निम्नलिखित पर चर्चा करें: सीपी में एसबीसी का महत्व:
  - सामाजिक और व्यवहार परिवर्तन (एसबीसी) का उद्देश्य व्यक्तियों और समुदायों को सशक्त बनाना और उन संरचनात्मक बाधाओं को कम करना है जो लोगों को सकारात्मक प्रथाओं को अपनाने और समाज को अधिक न्यायसंगत, समावेशी, एकजुट और शांतिपूर्ण बनने से रोकते हैं।
  - व्यवहार परिवर्तन की प्रक्रिया में परस्पर जुड़े चरण शामिल हैं
    - परिवर्तन प्रक्रिया का चरण 1 में हमें वह परिवर्तन समझना होता है जो जरूरी है। उदाहरण के लिए, हमें समझना चाहिए कि लड़कियों और लड़कों की शादी को कानून द्वारा निर्धारित उम्र से पहले नहीं करनी चाहिए क्योंकि यह उनके शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक स्वास्थ्य पर असर डाल सकता है।
    - चरण 2 में, हमें उस परिवर्तन की इच्छा जगानी होती है, जिससे परिवार और समुदाय एहसास करें कि शादी में देरी से बच्चों को उनकी शिक्षा, शारीरिक और मानसिक परिपक्वता में मदद मिलेगी, और वे समर्थ व्यक्ति बनेंगे।
    - चरण 3 में, जब हमें कोई परिवर्तन चाहिए, हमें उसे कैसे करें यह सोचना चाहिए, और हम नए कौशल सीख सकते हैं। जैसे कि, बच्चों को स्कूल भेजने और छात्रवृत्ति फॉर्म भरने की प्रक्रिया।
    - चरण 4 में, हमें उस परिवर्तन को आजमाना होता है। उदाहरण के लिए, बच्चों को स्कूल भेजने और छात्रवृत्ति फॉर्म भरने।
    - चरण 5 में, व्यवहार को दोहराना शामिल है। हमें वह नया व्यवहार बनाए रखना होता है। यदि हमारे प्रयासों से कोई नतीजा नहीं मिलता है, तो हम प्रक्रिया से हट जाते हैं (जैसे कि प्रयासों के बावजूद छात्रवृत्ति नहीं मिल रही है)। यदि प्रयास सफल है, तो हम इसे फिर से आजमाते हैं। इससे परिवारों को प्रेरित करने और समर्थन करने में मदद मिलती है।

व्यवहार परिवर्तन प्रक्रिया

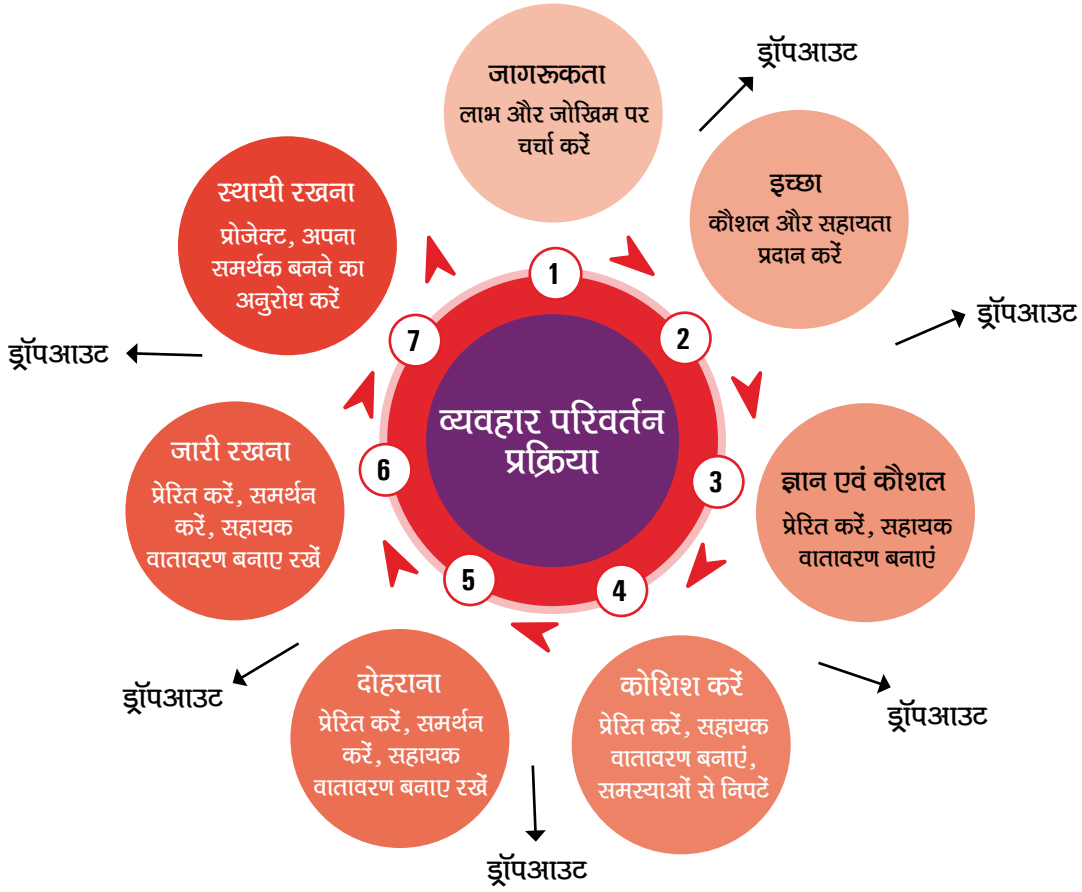

- यदि चरण 5 का अनुभव अच्छा था, तो व्यक्ति कार्रवाई को दोहराएगा, दूसरे शब्दों में व्यवहार को बनाए रखेगा (चरण 6) और जल्द ही यह एक स्थायी बन जाएगा। इस स्तर पर संकेत और रिमाइंडर मदद करते हैं। संचार और व्यवहारिक संकेत एसबीसी में मदद करते हैं। उदाहरण के लिए, स्कूल गर्मी की छुट्टियां खत्म होने से ठीक पहले अभिभावकों को स्कूल दोबारा खुलने की सही तारीख के बारे में रिमाइंडर भेजते हैं, या विशेष रूप से उन दिनों के दौरान बाल विवाह की बुराइयों पर संकेत और रिमाइंडर, जो विवाह संपन्न करने के लिए शुभ माने जाते हैं, मदद करते हैं।
- अब प्रतिभागियों से पूछें कि वे संचार से क्या समझते हैं? संभावित प्रतिक्रियाएँ संदेश भेजने, विचारों और ज्ञान का आदान–प्रदान हो सकता है।
- उन्हें एक–तरफ और दो–तरफ संचार के बारे में सोचने के लिए कहें कि यह क्या है और कौन सा बेहतर है, खासकर बच्चों के साथ काम करते समय। समूह से उदाहरण लेने के बाद उन्हें स्लाइड पर संचार की परिभाषा दिखाएँ।
- संचार दो–तरफ संवाद पर आधारित साझेदारी और भागीदारी का एक साधन है। संचार में स्थितियों को अन्य लोगों के दृष्टिकोण से देखना और यह समझना शामिल है कि वे क्या चाह रहे हैं। इसका अर्थ उन बाधाओं को समझना भी है जो परिवर्तन की प्रक्रिया में बाधा बनती हैं।
- इसमें शामिल मुद्दों की संवेदनशीलता को देखते हुए, प्रभावी संचार कौशल वाले बाल संरक्षण पदाधिकारी कर्मी स्थिति को अधिक प्रभावी ढंग से संभालने में सक्षम होंगे। बाल संरक्षण एक जटिल मुद्दा है और एक प्रभावी संचारक मुद्दों को कुशलता से संभाल सकता है।
- विभिन्न स्थितियों में बाल संरक्षण कार्यकर्ताओं के लिए अलग–अलग संवेदनशीलता और कौशल की आवश्यकता होती है।

- उदाहरण के लिए: वयस्क (Adult) अपराधियों की निगरानी के लिए जरूरी कौशल और ज्ञान, कानून से जुड़ने वाले किशोरों की निगरानी के लिए जरूरी कौशल और समझ से पूरी तरह अलग होते हैं। देखभाल और सुरक्षा की आवश्यकता वाले बच्चों (सीएनसीपी) या कानून का उल्लंघन करने वाले बच्चों (सीसीएल) से सम्बंधित किसी भी अधिकारी को मजबूत संचार कौशल और समझ की जरूरत होती है। अगर अधिकारी बच्चों को प्रेरित कर पाते हैं, तो वे बच्चों की स्वीकृति प्राप्त कर सकते हैं। अगर बच्चा उन्हें एक पुलिस अधिकारी की तरह नहीं देखता, तो अधिकारी सच्ची सफलता की उम्मीद कर सकते हैं।

- व्यवहार संबंधी संकेतों पर आगे चर्चा करें और निम्नलिखित स्लाइड दिखाएं।

व्यवहार अंतर्दृष्टि (Behaviour Insights)

- जब हम वर्तमान स्थिति के हितधारकों और बदलाव की बाधाओं को समझ लेते हैं, तो सामाजिक और व्यवहार में परिवर्तन लाना संभव हो सकता है।
- इस तरह की व्यवहार संबंधी अंतर्दृष्टि व्यवहारिक संकेतों के माध्यम से संचार प्रयासों को पूरा करने में मदद करती है, जो लोगों को स्वस्थ व्यवहार को अपनाने के निर्णय लेने में सहायक होती है।

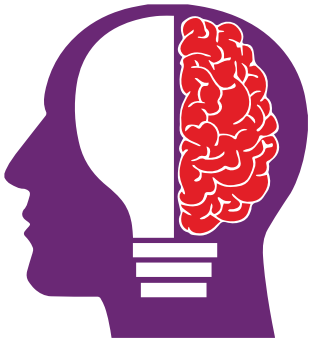

- उदाहरण: फलों और अन्य स्नैक्स को आसानी से उपलब्ध कराएं और उन्हें वहाँ रखें जहाँ वे स्पष्ट रूप से दिखाई दे सकें। अस्वास्थ्यकर स्नैक्स को अलमारी में ऊपर या नीचे रखें। लोगों के पास अब भी एक विकल्प होता है, लेकिन उन्हें इसे अनुकूलित करने के लिए मैत्रीपूर्ण प्रोत्साहन मिलता है।
- साथियों से बाल संरक्षण और दैनिक जीवन के संबंध में उनके काम में व्यवहारिक बदलावों पर विचार करने और उदाहरण साझा करने के लिए कहें। यदि विशिष्ट उदाहरण उपलब्ध नहीं हैं, तो निम्नलिखित पर चर्चा करें:
- विशेष रूप से ऐसे समय में जब बाल विवाह अक्सर होता है, तो संकटमय बच्चों के लिए बच्चों को सहायता करने वाले चाइल्डलाइन नंबर को उजागर करने वाले साइन बोर्ड, टेक्स्ट संदेश।
- शैक्षिक सत्र की शुरुआत से पहले लड़कों और लड़कियों के लिए स्कूल में नाम दर्ज करने का रिमाइंडर।
- बच्चों की शिक्षा में सहायता के लिए नियमित रूप से पैरेंट्स टीचर मीटिंग में भाग लेने वाले माता–पिता को पत्र और संदेश भेजना।
- हिंसा को रोकने के लिए बस स्टॉप पर लाइट लगाना।
- विशेष सुरक्षा कार्यों को प्रभावित करने के लिए डिजाइन की गई साइबर सुरक्षा, सुरक्षा सूचनाएं, संदेश और संकेत। वे लोगों को सही सुरक्षा निर्णय की ओर ले जाते हैं। जब यह सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है।

- **समूह कार्य:** प्रतिभागियों को चार समूहों में विभाजित करें – परिवार, समुदाय, संगठन, और नीति निर्माता।

  - पिछले सत्र के निष्कर्षों के आधार पर, प्रत्येक समूह से पूछें जहां बाल संरक्षण के बारे में बातचीत हुई थी। यह समझने की जरूरत है कि इस समस्या को हल करने के लिए सहयोग की कितनी आवश्यकता है। उन्हें निम्नलिखित प्रश्नों पर विचार करने के लिए कहें:
  - दिए गए हितधारकों के साथ जुड़ने का उद्देश्य क्या होगा?
  - दिए गए हितधारक के साथ जुड़ने के लिए कौन–कौन सी संचार विधि का उपयोग किया जाएगा?

- दिए गए हितधारक के साथ जुड़ने के लिए कौन सी संचार टूल का उपयोग किया जाएगा?
- दिए गए हितधारकों से जुड़ने के लिए कौन–कौन से प्लेटफॉर्म/टूल का उपयोग किया जाएगा?
- प्रत्येक समूह के निष्कर्षों को निम्नलिखित प्रारूप में एकत्रित करने के लिए यह बताएं कि उन्हें वास्तविक रूप में क्या करने की आवश्यकता है।
- प्रत्येक हितधारक समूह को चर्चा के लिए 10 मिनट और प्रस्तुति के लिए 5 मिनट का समय दें।

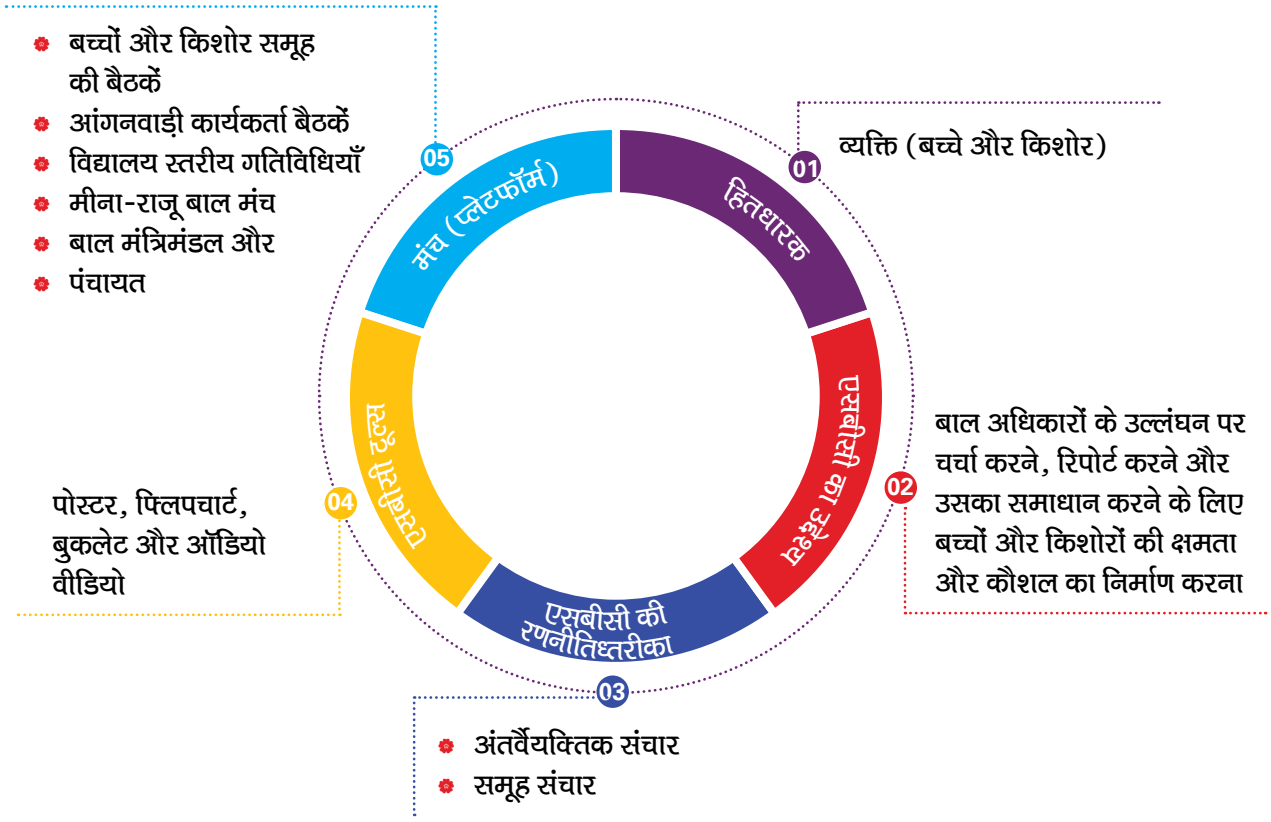

- चर्चा करें कि प्रत्येक हितधारक समूह के लिए, संचार उद्देश्य, रणनीतियाँ, तरीके, टूल और प्लेटफॉर्म अलग–अलग होते हैं। उन्हें निम्नलिखित स्लाइड दिखाएँ।
- अब प्रतिभागियों को समझाएं कि एसईएम के हर स्तर पर विभिन्न प्रकार के संचार की आवश्यकता होती है। उदाहरण के लिए, व्यक्तिगत स्तर पर संचार का प्रकार आईपीसी होगा। एसईएम के अंतर्वैयक्तिक स्तर पर, यह आईपीसी और अंतरपीढ़ीगत संचार होगा। सामुदायिक स्तर पर, सामुदायिक सहभागिता के माध्यम से समूह संचार और सामाजिक लामबंदी की जाती है। संगठन स्तर पर, सेवा प्रदाताओं की क्षमता वृद्धि की जाती है और अंत में, नीतिगत स्तर पर, वकालत की जाती है।'
- प्रतिभागियों से यह सोचने और उत्तर देने के लिए कहें कि वे स्वयं को एसईएम के किस स्तर पर देखते हैं और विभिन्न हितधारकों के साथ संचार करने के लिए उन्हें किन स्तरों पर जाना होगा। उन्हें सोचने और उत्तर देने के लिए प्रोत्साहित करें।

- उन्हें निम्नलिखित स्लाइड दिखाएं कि एसबीसी रणनीति विकास के कुछ तत्वों में शामिल हैं:

- **स्थिति विश्लेषण:** वर्तमान स्थिति को गहनता से समझने के लिए डेस्क–आधारित या माध्यमिक समीक्षा और प्राथमिक डेटा का उपयोग करें। इसमें समस्याओं, महत्वपूर्ण मुद्दों, ट्रिगर्स, प्रभावित लोगों, दर्शकों, और वर्तमान व्यक्तिगत और सामाजिक व्यवहार पर ध्यान केंद्रित होता है।
- **हितधारक मैपिंग और विश्लेषण:** व्यक्तिगत, परिवार, समुदाय, संगठनात्मक और नीति निर्माताओं के किसी मुद्दे से संबंधित सभी प्रासंगिक हितधारकों की मैपिंग।
- **उद्देश्यों को परिभाषित करना:** ज्ञान, दृष्टिकोण और व्यवहार में वर्तमान अंतराल क्या हैं? उदाहरण के लिए: बाल श्रम को समाप्त करने के लिए समुदायों को बाल श्रम की बुराइयों के बारे में ज्ञान होना चाहिए और यह समझना चाहिए कि शिक्षा बच्चों के बौद्धिक विकास में कैसे मदद करती है और भविष्य में उच्च आय के साथ बेहतर नौकरियां पाने के लिए उन्हें कौशल सिखाती है। दृष्टिकोण में बदलाव से माता–पिता बाल श्रम को गलत समझेंगे और यह जानेंगे कि यह बाल अधिकारों का उल्लंघन है और उनके बच्चों के लिए खतरनाक है। इसके अलावा, वे शिक्षा को बच्चों के विकास और भलाई के लिए महत्वपूर्ण मानेंगे। व्यवहारिक परिवर्तन तब होगा जब माता–पिता अपने बच्चों को मजदूरी से निकालकर स्कूल भेजेंगे।
- **लोगों की मैपिंग और विश्लेषण:** एक बार हितधारकों की पहचान हो जाने के बाद, यह देखना जरूरी है कि प्राथमिकता वाले लोग कौन हैं। इन लोगों के बारे में जनसंख्या, स्थान, ज्ञान, दृष्टिकोण, आकांक्षाएं, व्यवहार संबंधी जानकारी, विश्वास, मीडिया की आदतें और भावनाओं के बारे में जानकारी जुटानी होगी। जिस व्यवहार को बदलना है, वे लोग जरूरी नहीं कि सबसे ज्यादा प्रभावित हों, बल्कि वे लोग हो सकते हैं जिनके व्यवहार बदलने से कार्यक्रम का लक्ष्य सबसे ज्यादा हासिल हो सकेगा।
- **संचार संदेश, तरीके, चैनल, प्लेटफॉर्म और सामग्री:** दर्शकों का विभाजन विभिन्न बिन्दुओं को समझने में मदद करता है:
  - संदेशों में निवारक और प्रोत्साहन संदेश हो सकते हैं। उदाहरण के लिए, एक संदेश यह हो सकता है कि बच्चों को शिक्षा का अधिकार है और उन्हें स्कूल जाना चाहिए। इसके अलावा, संदेश दंडात्मक भी हो सकते हैं, जैसे कि कानून द्वारा निर्धारित उम्र से पहले बच्चों की शादी करना गलत है। संदेश का निर्माण और वितरण बच्चों, माता–पिता, समुदायों और (फ्रंटलाइन कार्यकर्ताओं) और पदाधिकारियों, नेताओं और नीति निर्माताओं के लिए अलग–अलग हो सकता है।
  - संचार दृष्टिकोण और तरीके: अंतर्वैयक्तिक संचार, समूह संचार, जन संचार, सामुदायिक गतिशीलता और बहुक्षेत्रीय सहयोग जिसमें संचार प्रयासों में सभी प्रासंगिक क्षेत्र शामिल हैं,

उदाहरण के लिए बाल संरक्षण, स्वास्थ्य और शिक्षा कार्यकर्ता बाल विवाह को समाप्त करने पर संदेश दे रहे हैं और उन्हें सुदृढ़ कर रहे हैं।

- कार्यक्रमों में पदाधिकारियों की क्षमता वृद्धि, माता–पिता और बच्चों के बीच अंतर–पीढ़ीगत संवाद, सामुदायिक बैठकें और सत्र, सामाजिक गतिशीलता अभियान, सहकर्मी समूह गठन और बैठकें शामिल होंगी।
- चैनल और आवश्यक सामग्री। संचार चौनलों में मास मीडिया, सोशल मीडिया और ट्रांसमीडिया शामिल हैं और सामग्रियों में प्रिंट, ऑडियो, वीडियो सामग्री शामिल हैं
- प्लेटफार्म विभिन्न प्रकार के हो सकते हैं जैसे पारस्परिक (घर भ्रमण), समूह (आंगनवाड़ी केंद्रों पर बैठक) या समुदाय आधारित (वीएचएसएनडी)। क्षेत्रीय समन्वय के लिए स्कूल आधारित प्लेटफार्म जैसे अभिभावक–शिक्षक बैठकें, मीना और राजू मंच का उपयोग किया जा सकता है। सामुदायिक मंचों में ग्राम बैठकें, वीएचएसएनडी, किशोर स्वास्थ्य दिवस शामिल हो सकते हैं। इन मंचों पर स्वास्थ्य, बाल संरक्षण और शिक्षा के मुद्दों पर प्रभावी ढंग से चर्चा और समाधान किया जा सकता है।

- **योजना:** इस योजना में भूमिकाओं और जिम्मेदारियों और समय सीमा के साथ एसबीसी गतिविधियों का एक ब्लू प्रिंट विकसित करना शामिल है।

- समूह से पूछें कि प्रभावी एसबीसी के लिए कुछ आवश्यक कौशल क्या हैं। कौशलों की सूची बनाएं और निम्नलिखित स्लाइड के साथ प्रतिक्रियाओं को पूरक करें।

तालमेल बनाना: किसी अन्य व्यक्ति, या लोगों के समूह के साथ चीजें समान होने से संबंध या तालमेल बनाना अच्छा होता है, और इससे संचार प्रक्रिया आसान और आमतौर पर अधिक प्रभावी हो जाती है।

समानुभूति: समानुभूति यह है कि एक व्यक्ति के रूप में हम कैसे समझते हैं कि दूसरे क्या अनुभव कर रहे हैं जैसे कि हम स्वयं इसे महसूस कर रहे हों।

सक्रियता से सुनना: सुनना एक सक्रिय प्रक्रिया है जिसमें वक्ता के संदेश को केवल निष्क्रिय रूप से 'सुनने' के बजाय जो कहा जा रहा है उस पर ध्यान केंद्रित करके वक्ता के संदेशों को सुनने और समझने का निर्णय लिया जाता है। सक्रियता से सुनने में सभी इंद्रियों के साथ सुनने के साथ–साथ वक्ता पर पूरा ध्यान देना भी शामिल है। श्रोताओं को तटस्थ और गैर–निर्णयात्मक रहना चाहिए इसका मतलब है किसी का पक्ष लेने या राय बनाने की कोशिश न करना, खासकर बातचीत की शुरुआत में।

उदाहरण देना: ऐसे उदाहरणों का उपयोग करना जो सही हों, समझने में आसान हों, स्थानीय रूप से प्रासंगिक हों और गोपनीयता सुनिश्चित करने वाले हों

व्याख्या: संचारकर्ता संदेश की बातों को फिर से समझाता है। वह बताता है कि जो कुछ कहा गया था, उसे सरल और स्पष्ट बनाता है ताकि लोगों को समझ में आ सके। इससे लोगों के विचारों की सटीकता बढ़ती है और उन्हें अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए प्रेरित करता है।

प्रोत्साहन: लोगों को बोलने, सवाल पूछने और अपनी राय देने के लिए प्रोत्साहित करें, भले ही वे असहमत हों। उनके विचारों और राय का सम्मान करें।

सारांशः सारांश दो या दो से अधिक पैराग्राफों का संग्रह होता है जो क्लाइंट के संदेशों के कई हिस्सों को एक साथ जोड़ता है। यह एक सामान्य विषय या पैटर्न की पहचान करने, सत्र शुरू करने या समाप्त करने के लिए संदेशों या सत्र का सार बताता है।

प्रश्न पूछनाः प्रश्न संचार कार्यक्रम का हिस्सा हैं और दो–तरफा संचार का अभिन्न अंग हैं, जिसमें ओपन और क्लोज–एंडेड दोनों प्रश्न शामिल हैं।

समूहों के साथ जुड़नाः कौशल में बच्चों के मुद्दों पर समर्थन के लिए सामुदायिक समूहों और प्रतिनिधियों, विशेष रूप से स्थानीय प्रभावशाली लोगों से बात करना शामिल होगा।

संवाद और चर्चा के लिए मंच बनानाः प्रभावी संचारकों को संवाद और चर्चा के लिए मंच भी बनाना चाहिए जैसे कि पंचायत बैठकों, ग्राम मेलों, आंगनवाड़ी में माताओं की बैठकों, वीएचएसएनडी और एएचडी, एसएचजी बैठकों के दौरान बाल संरक्षण संदेश देना।

अंतर–पीढ़ीगत संवाद को बढ़ावा देनाः प्रभावी संचारकों को अंतर–पीढ़ीगत संवादों के लिए मंच और अवसर बनाने चाहिए, जिसमें माता–पिता और वयस्क (Adult) और बच्चे बाल संरक्षण के मुद्दों पर चर्चा करने के लिए एक साथ आ सकें, जैसे कि माता–पिता–बच्चों की बैठकें आयोजित करना पंचायत और ग्राम स्तरीय बैठकों में अपने दृष्टिकोण साझा करने के लिए बच्चों को शामिल करना।

सहकर्मी से सहकर्मी समर्थन नेटवर्क की पहचान करना और उसे मजबूत करनाः प्रभावी संचारकों को सहकर्मी समूह, युवा समूह बनाकर, स्कूल कैबिनेट, मीना और राजू मंच जैसे स्कूल–आधारित प्लेटफार्मों का लाभ उठाकर सहकर्मी से सहकर्मी संचार को भी पहचानना और मजबूत करना चाहिए।

- इस बात पर प्रकाश डालते हुए निष्कर्ष निकालें कि एक पदाधिकारी के रूप में हमें बच्चों, परिवारों और समुदायों के साथ जुड़ते समय इन कौशलों को विकसित करने और लाने का प्रयास करना चाहिए।

मुख्य सीख

सामाजिक और व्यवहार परिवर्तन (एसबीसी) का मकसद यह है कि लोगों और समुदायों को मजबूत बनाया जाए और उन्हें वहां उभरने वाली समस्याओं को कम करने में मदद मिले, जो लोगों को सकारात्मक कामों की ओर नहीं ले जाने देती हैं और सामाजिक न्यायसंगत, समावेशी, एकजुट और शांतिपूर्ण समाज की राह में रुकावट डालती हैं।

एसबीसी में संचार और व्यवहार संकेत मदद करते हैं।

विभिन्न हितधारकों के लिए विभिन्न संचार विधियों, उपकरणों और सामग्रियों की आवश्यकता होती है।

एसबीसी की रणनीति में स्थिति विश्लेषण, हितधारक मानचित्रण, दर्शकों का मानचित्रण और विश्लेषण, सही संचार विधियों, चैनलों, प्लेटफार्मों और सामग्रियों का चयन करना और भूमिकाओं और जिम्मेदारियों और समय सीमा के साथ एक विस्तृत संचार योजना बनाना शामिल है।

एसबीसी के लिए संचार के लिए आवश्यक कौशल में संबंध बनाना, समानुभूति, सक्रिय रूप से सुनना, उदाहरण देना, व्याख्या करना, प्रोत्साहन देना, सारांश करना और प्रश्न पूछना शामिल है।

सत्र 4

एसबीसी के लिए अभिसरण कार्य योजना

सत्र के अपेक्षित परिणाम

सत्र के अंत तक प्रतिभागी:

- उन सहयोगी पदाधिकारियों की सूची बनाएंगे जो बाल संरक्षण पदाधिकारियों का समर्थन कर सकते हैं
- अभिसरण कार्य योजना और संबद्ध पदाधिकारियों की भूमिका और जिम्मेदारियों का वर्णन कर पाएंगे

समय

- 50 मिनट
- संबद्ध पदाधिकारियों की सूची – 5 मिनट
- उनकी भूमिकाओं और जिम्मेदारियों का वर्णन – 5 मिनट
- अभिसरण कार्य योजना और चर्चा – 40 मिनट

आवश्यक सामग्री

- प्रोजेक्टर, पीपीटी, फ्लिप चार्ट

प्रक्रिया

- प्रतिभागियों से उन अन्य विभागों के हितधारकों की सूची बनाने के लिए कहें जिनके साथ वे काम करते हैं। इन हितधारकों की सूची बनाएं। कुछ प्रतिभागियों से यह साझा करने के लिए कहें कि उन्होंने इन हितधारकों के साथ कैसे सहयोग किया। सूची इस तरह दिखेगी:

- प्रतिभागियों से बाल संरक्षण कार्य के समर्थन में उनकी भूमिका पर चर्चा करने के लिए कहें। संभावित प्रतिक्रियाओं में शामिल हो सकते हैं:
  - बाल संरक्षण मुद्दों की पहचान और रिपोर्टिंग
  - अपने काम और सेवा देने के दौरान बाल संरक्षण मुद्दों पर जागरूकता पैदा करना
  - अपने कार्यक्रम संदेश के साथ बाल संरक्षण संदेशों को शामिल करके माता–पिता, परिवारों और समुदायों के साथ जुड़ना
  - बाल संरक्षण पदाधिकारियों के सहयोग से बाल संरक्षण मुद्दों और मामलों पर प्रतिक्रिया देना
  - स्वास्थ्य, पोषण, शिक्षा एवं सामाजिक सुरक्षा सेवाएँ प्रदान करना
  - रेफरल और सहायता सेवाएँ प्रदान करना
- अभिसरण प्रोग्रामिंग को इस तरह परिभाषित करें: "अभिसरण का मतलब है बच्चों के मुद्दों को समझने के लिए विभिन्न क्षेत्रों, विभागों, मंत्रालयों और एजेंसियों का समन्वय और एकीकरण। जैसे शिक्षा, यौन और प्रजनन स्वास्थ्य, बाल संरक्षण, और लिंग आधारित हिंसा की रोकथाम (जीबीवी)।" यह स्लाइड बताती है कि मानवीय प्रतिक्रिया के तहत, कैसे विभिन्न क्षेत्रों के हितधारक एक साथ आकर बच्चों के मुद्दों पर चर्चा और समाधान के लिए अवसर और मंच तैयार करते हैं।

- समूह कार्यः प्रतिभागियों को तीन समूह ए, बी और सी में विभाजित करें।
  - . समूह को निम्नलिखित स्थिति दें "आप जिला मजिस्ट्रेट की समिति का हिस्सा हैं, जिसे अगले एक वर्ष में जिले को बाल विवाह मुक्त बनाने की योजना बनाने का काम सौंपा गया है। आपसे संबद्ध हितधारकों की पहचान करने और जिले को बाल विवाह मुक्त बनाने के लिए उनके द्वारा उठाए जाने वाले प्रमुख कदमों के बारे में पूछा गया है। कृपया निम्नलिखित टेम्पलेट के आधार पर एक कार्य योजना तैयार करें।

हितधारक	उद्देश्य	हितधारकों को मुख्य इनपुट या समर्थन	इन हितधारकों से अपेक्षित प्रमुख आउटपुट या कार्रवाई	सहभागिता के लिए प्लेटफॉर्म जिसका लाभ उठाया जाएगा

  - प्रत्येक समूह को निम्नलिखित के लिए कार्य योजना तैयार करने के लिए कहें
    समूह एः स्वास्थ्य कार्यकर्ता
    समूह बीः शिक्षा पदाधिकारी
    समूह सीः कानून प्रवर्तन पदाधिकारी
  - समूहों को चर्चा करने और प्रारूप भरने के लिए 10 मिनट और साझा करने के लिए प्रत्येक को 5 मिनट का समय दें
  - प्रस्तुतीकरण चर्चा के बाद, क्या प्रत्येक पदाधिकारी की प्रमुख कार्रवाइयां जुड़ी हुई थीं, यदि एक हितधारक उन्हें सौंपी गई कार्रवाई को पूरा करने में विफल रहता है तो क्या होगा। एक बार फिर बच्चों, जो देश का भविष्य हैं, की भलाई सुनिश्चित करने के लिए बहुहितधारक जुड़ाव और अभिसरण कार्रवाई के महत्व पर प्रकाश डालें।

मुख्य सीख

स्वास्थ्य, शिक्षा, कानून प्रवर्तन, श्रम जैसे सहयोगी कार्यकर्ता बाल संरक्षण कार्य में सहायता करते हैं, बाल संरक्षण मुद्दों की पहचान करते हैं और रिपोर्ट करते हैं, जागरूकता फैलाते हैं, परिवार और समुदाय में जुड़ाव बढ़ाते हैं और सहायता सेवाओं का विस्तार करते हैं।

अभिसरण प्रोग्रामिंग 'अभिसरण बच्चों के मुद्दों को समझने, जैसे कि शिक्षा, यौन और प्रजनन स्वास्थ्य, बाल संरक्षण, लिंग आधारित हिंसा की रोकथाम (जीबीवी) और मानवीय प्रतिक्रिया के बीच संबंध बनाने के लिए क्षेत्रों, विभागों, मंत्रालयों और एजेंसियों का समन्वय और एकीकरण है।'

बाल संरक्षण पदाधिकारियों को अन्य सहयोगियों के साथ मिलकर काम करना चाहिए। इसके लिए एक अभिसरण कार्य योजना बनानी चाहिए। इसमें सभी हितधारकों के साथ बातचीत कर सामान्य लक्ष्यों और उद्देश्यों के लिए काम करना शामिल है। इस योजना में उनके काम, अपेक्षित परिणाम, लक्ष्य और समयसीमा को स्पष्ट रूप से बताना चाहिए ताकि सभी को जरूरी इनपुट और समर्थन मिल सके।